महावीरा समाचार

आवृति-1 17 दिसम्बर 2022

बाली मे बाजरा की गूंज

2023- अन्तराष्ट्रीय मिलेट्स की गतिविधियों मे तेजी

2023 को अन्तराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष (IYOM) के रूप मे मनाने की भारत सरकार की मुहिम दिनोंदिन गति पकड़ रही है। गत सप्ताह इंडोनेशिया के बाली मे सम्पन्न हुए जी-20 सम्मेलन मे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी सभी देशों को आव्हान किया की टिकाऊ खाद सुरक्षा (सस्टैनबल फूड सिक्युरिटी) के लिए मोटे अनाजों के उत्पादन को बढ़ावा देना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने कहा कि "बाजरा जैसी फसल से वैज्ञानिक कुपोषण और भुखमरी की समस्या का समुचित तरीके से सामना किया जा सकता है। हम सभी को उत्साहपूर्वक आने वाले वर्ष 2023 को अन्तराष्ट्रीय बाजरा वर्ष के रूप मे मनाना चाहिए।

बाजरा से होने वाले स्वास्थ लाभ

- बाजरा मे भरपूर मात्रा मे मैग्नीशियम और पोटैशियम पाए जाते है। जो हार्ट के लिए बहुत फायदेमंद होता है।
- बाजरे मे पाए जाने वाले तत्व मधुमेह के मरीजों के लिए फायदेमंद होते है।
- बाजरे मे फ़ाइबर अधिक मात्रा मे पाया जाता है। जो वजन घटाने मे सहायता करता है
- बाजरा से पाचन प्रक्रिया अच्छी रहती है

महावीरा कृषि दर्शन

प्याज की अच्छी फसल के लिए अपनाए ये तकनीक

प्याज की फसल से अच्छी पैदावार निम्न तकनीक अपनाकर ली जा सकती है।

- इसके लिए जीवांश जल निकास वाली भूमि उपयुक्त होती है
- गोबर खाद 250 क्विंटल/ हेक्टेयर के साथ 220 किलो युरिया, 375 किलो महावीरा जिरॉन तथा 100 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टेयर डालें
- युरिया की आधी मात्रा सिंगल सुपर फॉस्फेट (जिरॉन) तथा पोटाश बुआई/ रोपाई के समय डालें । युरिया की शेष मात्रा को दो भागों मे बाँट कर रोपाई के 30 दिन तथा 45 दिन बाद डालें
- एक हेक्टेयर के लिए 8-10 किलो बीज/ हेक्टेयर की दर से नर्सरी मे डालें
- जब पौधे 15-20 सेन्टमीटर के हो जाए तब उसकी रोपाई मुख्य खेत मे करें
- उन्नत जातियों मे अग्रिफाइड, डार्करेड, ए 53, पुसा रेड आदि है

गेहूं की उन्नत खेती

गेहूँ मध्य पूर्व के लेवांत क्षेत्र से आई एक घाँस है, जिसकी खेती दुनिया भर में की जाती है। विश्व भर में, भोजन के लिए उगाई जाने वाली धान्य फसलों मे मक्का के बाद गेहूं दूसरी सबसे ज्यादा उगाई जाने वाले फसल है

गेहूँ की उपज लगातार बढ रही है। यह वृध्दि गेहूँ की उन्नत किस्मों तथा वैज्ञानिक विधियों से हो रही है।

भारत गेहूं का दूसरा बड़ा उत्पादक देश है केरल, मणिपुर व नागालैंड राज्यों को छोड़ कर अन्य सभी राज्यों में इस की खेती की जाती है उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व पंजाब सर्वाधिक रकबे में गेहूं की पैदावार करने वाले राज्य हैं।

यह प्रोटीन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेटस का प्रमुख स्त्रोत है और संतुलित भोजन प्रदान करता है। रूस, अमरीका और चीन के बाद भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा गेहूं का उत्पादक है।

विश्व में पैदा होने वाली गेंहूं की पैदावार में भारत का योगदान 8.7 फीसदी है।

भूमि-

- मटियार दोमट मिट्टी सबसे अच्छी रहती है
- क्षारीय एवं खारी भूमि गेहूं की खेती के लिए अच्छी नहीं होती
- भूमि में पानी भर जाता हो, वहां भी गेहूं की खेती नहीं करनी चाहिए।

बीज उपचार-

- बुवाई से पूर्व बीज कोटेबुकोनाज़ोल 2% डी.एस. या थिरम 2 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।

- **खाद एवं रासायनिक खाद**
- मिट्टी परीक्षण अवश्य कराएँ
- परीक्षण के आधार पर नाइट्रोजन, फास्फेट एवं पोटाश की मात्रा का निर्धारण अनुशंसा -
- प्रदेश में लगभग सभी जिलों में सूक्ष्म तत्वों की कमी
- 25 कि.ग्रा./हे. की दर से जिंक सल्फेट का प्रयोग
- जिंक सल्फेट का प्रयोग 3 फसल के उपरांत (न की प्रत्येक वर्ष)

महावीरा कृषि दर्शन

बुआई का समय, तरीका एवं बीज की मात्रा

असिंचित(Unirrigated): असिंचित गेहूँ ही बुआई का समय 15 अक्टूबर से 31 अक्टूबर है इस अवधि में बुआई तभी संभव है जब सितम्बर माह में पर्याप्त वर्षा हो जाती हैं।

इससे भूमि में आवश्यक नमी बनी रहती हैं। यदि बोये जाने वाले बीज के हजार दानों (1000 दानों) का वजन 38 ग्राम है तो 100 किलो प्रति हेक्टेयर बीज प्रयोग करें। हजार दानों का वजन 38 ग्राम से अधिक होने पर प्रति ग्राम 2 किलो प्रति हेक्टेयर बीज की मात्रा बढ़ा दें।

सिंचित: सामयिक बोनी जिसमें नवम्बर का प्रथम पखवाड़ा उत्तम होता है, 15-25 नवम्बर तक सिंचित एवं समय वाली जातियों की बोनी आवश्यक कर लेना चाहिये। बीज को बोते समय 2-3 से.मी. की गहराई में बोना चाहिये जिससे अंकुरण के लिये पर्याप्त नमी मिलती रहे।

कतार से कतार की दूरी 20 से.मी. रखना चाहिये। इस हेतु बीज की मात्रा औसतन 100 कि.ग्राम/ हे. रखना चाहिये या बीज के आकार के हिसाब से उसकी मात्रा का निर्धारण करें तथा कतार से कतार की दूरी 18 से.मी. रखें।

खेत की तैयारी

- पिछली फसल की कटाई के बाद खेत की अच्छे तरीके से ट्रैक्टर की मदद से जुताई की जानी चाहिए।
- खेत को आमतौर पर ट्रैक्टर के साथ तवियां जोड़कर जोता जाता है
- उसके बाद दो या तीन बार हल से जुताई की जाती है।
- खेत की मिट्टी को बारीक और भुरभुरी करने के लिए गहरी जुताई करनी चाहिए।
- खेत की जुताई शाम के समय की जानी चाहिए
- रोपाई की गई ज़मीन को पूरी रात खुला छोड़ देना
- जिससे ओस की बूंदों से नमी आ सके।

गेहूँ की खेती में सिंचाई

- पहली सिंचाई बुवाई के 3 से 4 सप्ताह बाद दी जानी चाहिए ।
- बुवाई के 40 से 45 दिन बाद दूसरी सिंचाई करनी चाहिए।
- बुवाई के 60 से 65 दिन बाद 3 सिंचाई।
- बुवाई के 80 से 85 दिन बाद 4 सिंचाई करें।
- बुवाई के 100 से 105 दिन बाद 5 वीं सिंचाई करें।
- बुआई के 105 से 120 दिन बाद 6 वीं सिंचाई करें।

	नाइट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश
सिंचित	120	60	40 कि.ग्रा./हे.
देरी से	80	40	30 कि.ग्रा./हे.

नींदनाशक रसायनों की मात्रा एवं प्रयोग समय:-

नींदानाशक	खरपतवार	दर/हे.	प्रयोग का समय
सल्फोसल्फूरान	संकरी एवं चौड़ी	33.5 ग्रा.	बुवाई के 35 दिन तक
मेट्रीब्यूजिन	संकरी एवं चौड़ी	250 ग्रा.	बुवाई के 35 दिन तक
2, 4 - डी	चौड़ी पत्तिया	0.4 - 0.5 किग्रा.	बुवाई के 35 दिन तक
आइसोप्रोपयूरान	संकर पत्तिया	750 ग्रा.	बुवाई के 20 दिन तक

महावीरा एग्री एड्वाइज़री

समस्या-समाधान

अच्छी गेहूँ की फसल से अच्छी ऊपज कैसे प्राप्त की जा सकती है ?

Ans- अनुमोदित नवीनतम रोग व कीट प्रतिरोधी प्रजातियों को ही उगाएं। नाइट्रोजन उर्वरक का संतुलित मात्रा में उपयोग करें।

·बीज जनित संक्रमण के प्रबंधन के लिए प्रमाणित बीज का प्रयोग करें। बीजों को कार्बोक्सिन (75 डब्ल्यूपी) या कार्बेन्डाजीम (50 डब्ल्यूपी) से 2.5 ग्राम/किलोग्राम की दर से उपचारित करें।

पीला रतुआ रोग की पुष्टि होने पर क्या उपाय करें

Ans- ·पीला रतुआ रोग की पुष्टि होने पर प्रापीकोनाजोल (25 ईसी) या टेब्यूकोनाजोल (250 ईसी) नामक दवा का 0.1 प्रतिशत (1.0 मिली/लीटर) का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। एक एकड़ खेत मे 200 मिलीलीटर दवा को 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। रोग के प्रकोप और फैलाव को देखते हुए यदि आवश्यक हो तो 15-20 दिन के अंतराल पर दोबारा छिड़काव करें।

यदि चूर्णिल आसिता रोग के लक्षण दिखाई दे तो निम्न उपाय कर रोकथाम कर सकते हैं

Ans- चूर्णिल आसिता रोग के लक्षण दिखाई दे तो उसके नियंत्रण के लिए प्रोपीकोनाजोल (25 ईसी) नामक दवा की 0.1 प्रतिशत (1.0 मिली/लीटर) मात्रा का एक छिड़काव पौधों में बाली निकलते समय बीमारी से प्रभावित क्षेत्र में करना चाहिए।

करनाल बंट फसल मे दिखाई देने पर क्या उपाय करना चाहिए

Ans- करनाल बंट प्रबंधन के लिए फसल में बाली निकलने के समय प्रोपीकोनाजोल (25 ईसी) नामक दवा की 0.1 प्रतिशत (1.0 मिली/लीटर) मात्रा का छिड़काव किया जा सकता है। माहू की संख्या का आर्थिक क्षति स्तर (ईटीएल 10-15 माहू प्रति शूट) को पार करने पर इमिडाक्लोप्रिड 200 एसएल (17ब्ल्यू/डब्ल्यू) का 40 मिलीलीटर/एकड़ की दर से छिड़काव करें।

उकठा चना की फसल का प्रमुख रोग है इसके रोकथाम के उपाय बताएं

Ans- उकठा के लक्षण बुआई के 30 दिन से फली लगने तक दिखाई देते है ।
पौधों का झुककर मुरझाना
विभाजित जड़ में भूरी काली धारियों का दिखाई देना ।

चना की बुवाई अक्टूबर माह के अंत में या नवम्बर माह के प्रथम सप्ताह में करें।

गर्मी के मौसम (अप्रैल- मई) में खेत की गहरी जुताई करें

उकठा रोगरोधी जातियां लगाऐं जैसे :
देसी चना - जे.जी. 315, जे.जी. 322, जे.जी. 74, जे.जी. 130, जाकी 9218, जे.जी. 16, जे.जी. 11, जे.जी. 63, जे.जी. 12,
काबुली - जे.जी.के. 1, जे.जी.के. 2, जे.जी.के. 3
काबुली चना - जे.जी.के. 1, जे.जी.के. 2, जे.जी.के. 3 s बीज बोने से पहले कार्बाक्सिन 75% फफूंद नाषक की 2 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से करें ।

सिंचाई दिन में न करते हुए शाम के समय करें ।

महावीरा यशोगाथा

महावीरा की कहानी- कृषक की जुबानी

राजेन्द्र रामनाथ सिंह
इंडोरी गावं, अकोला
फसल- प्याज
प्रोडक्ट- महावीरा जिरॉन

उन्होंने अपनी प्याज की फसल मे महावीरा जिरॉन का इस्तेमाल किया था | रामनाथ जी को बहुत अच्छे परिणाम मिले| अपना अनुभव शेयर करते हुए उन्होंने बताया की जिन्होंने भी जिरॉन खाद का इस्तेमाल नहीं किया है उनके मुकाबले राजेन्द्र जी की फसल के परिणाम काफी अच्छे रहे है | उन्होंने बताया की महावीरा जिरॉन के इस्तेमाल से प्याज मे सूखने की समस्या नहीं है और कंद भी भारी हो रहें है | पिछले कई सालों से राजेन्द्र जी महावीरा जिरॉन का इस्तेमाल कर रहे है

किसान भाई
महू, इंदौर
फसल- गेहूँ
प्रोडक्ट- महावीरा जिरॉन

हमारे किसान भाई ने महावीरा जिरॉन का इस्तेमाल अपने गेहूँ की फसल मे किया है, जिससे उन्हे बहुत अच्छे परिणाम मिले है। अपना अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि शुरुआती परिणाम से ही उन्हे उत्पादन का अंदाज हो गया है। फसल का तना और जड़े एक अच्छी ऊपज को दर्शा रहा है। उन्होंने इसका इस्तेमाल पहली बार किया है और खाद की क्वालिटी से बहुत प्रभावित है।

महावीरा एमिट्रॉन- एल

- 25 अमीनो एसिड का मिश्रण
- पूरी तरह से बायोडिग्रेडेबल
- पर्यावरण के अनुकूल उत्पाद
- फूल फलने और समग्र उपज बढ़ती है
- सभी फसलों मे उपयोगी
- अन्य उर्वरकों के साथ मिलाया जा सकता है

महावीरा की उपलब्धियां

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर, महावीरा ने कृषि के क्षेत्र में महिला किसानों की भागीदारी को प्रेरित करने के लिए एक वीडियो लॉन्च किया। हमें यह घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि हमें एक अलग पहलू में कृषि को बनाने और बढ़ावा देने के लिए फर्टिलाइजर एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

प्रगतिशील बेटियों के साथ प्रगतिशील खेती वाले विडिओ ने चारों ओर से ध्यान और प्यार प्राप्त किया और हमने सफलतापूर्वक दूसरा पुरस्कार हासिल किया। फर्टिलाइजर एसोसिएशन ऑफ इंडिया की वार्षिक बैठक में माननीय **फर्टलाइज़र एवं हेल्थ मिनिस्टर श्री मांडविया जी** द्वारा महावीरा को सम्मानित किया गया।

संस्था की ओर से हमारे माननीय एमडी सर श्री विनीत जैन ने पुरस्कार प्राप्त किया। हमें यह घोषणा करते हुए भी खुशी हो रही है कि इस वीडियो की योजना बनाने से लेकर इसे क्रियान्वित करने तक ज्यादातर महिलाएं लगी हुई थीं जिन्होंने इस कदम को उठाया और कृषि के क्षेत्र में एक नया आयाम लाया।

हम अपने सभी किसान भाइयों और बहनों के आभारी हैं जिन्होंने हमें समर्थन दिया और इस ऊंचाई को हासिल करने में हमारी मदद की। हम आपसे महावीरा और महिला किसानों के लिए और अधिक प्रोत्साहन की उम्मीद करते हैं।